Toppersnotes
Unleash the topper in you

राजस्थान हाई कोर्ट

चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी

हिन्दी तथा अंग्रेजी

SIERRA INNOVATIONS
Private Limited

हिन्दी

विषय सूची

1.	व्यंजन	1
2.	संज्ञा	4
3.	सर्वनाम	7
4.	विशेषण	10
5.	क्रिया	14
6.	काल	17
7.	संधि एवं संधि विच्छेद	21
8.	उपसर्ग	44
9.	प्रत्यय	79
10.	समास	97
11.	शब्द शुद्धि	115
12.	व्याकरणीय अशुद्धियों का शुद्धिकरण	130
13.	शब्द युग्मों के अर्थ भेद	141
14.	पर्यायवाची शब्द	151
15.	विलोम शब्द	169
16.	वाक्य शुद्धि	177
17.	वाक्यांश के लिए उपयुक्त शब्द	189
18.	पारिभाषिक शब्दावली	205
19.	मुहावरे	208
20.	लोकोक्ति	221
21.	रचना एवं रचनाकार	235

English

Contents

1. **Basics of English**
   - **Noun** 241
   - **Pronoun** 243
   - **Adjective** 246
   - **Articles** 252
   - **Verb** 254
   - **Conjunction** 261
   - **Tense** 265
   - **Preposition** 269
2. **Correction of Common Errors** 275
3. **Synonym & Antonym** 298
4. **Idiom & Phrases** 303
5. **Reading Comprehension** 320
6. **Gender** 335
7. **Simple, Compound & Complex Sentences** 340
8. **Editing & Omission** 349

हिन्दी

व्यंजन (Consonant)

व्यंजन के उच्चारण मे स्वर की सहायता ली जाती है । व्यंजन–ध्वनि अवरोध के हटने पर उच्चारित होती है और ज्यों ही अवरोध हटता है तो कुछ–न–कुछ स्वर की ध्वनि आ ही जाती है ।

व्यंजनों का वर्गीकरण :–

व्यंजनों का वर्गीकरण मुख्यतः दो आधारों पर किया जाता है ।

(क) प्रयत्न (स्पर्श/संघर्षी, घोष/अघोष, अल्पप्राण/महाप्राण, अनुनासिक/निरनुनासिक) प्रकंपन, उत्क्षेप, ईषत् अवरोध आदि ।

(ख) उच्चारण स्थान

(क) प्रयत्न–विधि के आधार पर वर्गीकरण :–

व्यंजनों के वर्गीकरण का पहला आधार प्रयत्न विधि है जिसके अनुसार फेफड़ों से निकलने वाली वायु मुख विवर मे कही रूक जाती है, कहीं रगड खाती है, कही नाक से निकलती है ।

1. स्पर्श्य (Stop) व्यंजन– जिन व्यंजनों के उच्चारण मे जीभ का दाँत, वर्त्स, तालु, मूर्धा या दोनो होठों अथवा गले की आंतरिक चमडी मे स्पर्श होता है तथा कुछ रूकावट के बाद ध्वनि का स्फोट होता है और श्वास बाहर निकल जाती है, स्पर्श्य व्यंजन कहे जाते है । हिन्दी मे क वर्ग ट वर्ग त वर्ग एवं प वर्ग कें 20 व्यंजन स्पर्श्य व्यंजन है ।

2. स्पर्श संघर्षी (Affricate) व्यंजन– च वर्ग के बोलने मे साँस स्पर्श के साथ साथ कुछ घर्षण के साथ निकलती है इसलिए च्, छ्, ज्, झ्, ञ को स्पर्श संघर्षी माना गया है ।

3. संघर्षी (Fricative) व्यंजन – श् ष् स् ह् के उच्चारण मे मुख अंगो के परस्पर निकट आने से वायु–मार्ग संकीर्ण हो जाता है तथा हवा घर्षण (संघर्ष) के साथ निकलती है, इसलिए इन्हे संघर्षी व्यंजन कहा जाता है । इन्हे ऊष्म (Sibilent) व्यंजन भी कहते है ।

4. उत्क्षिप्त (Flapped) व्यंजन– ड एवं ढ व्यंजन का उच्चारण जीभ की नोक को उलट कर मूर्धा को झटके के साथ दूर तक छूकर किया जाता है, इसलिए इन्हें उत्क्षिप्त (जीभ के ऊपर उछलने से उत्पन्न) या द्विस्पृष्ट (जीभ के दो बार स्पर्श करने से उत्पन्न) अथवा ताडनजात (जीभ के मूर्धा पर मारने से उत्पन्न) व्यंजन भी कहते है ।

5. लुंठित/प्रकंपित (Trilled) व्यंजन– क्योकि र् के उच्चारण मे जीभ लुढकती–सी/जीभ को कंपित करती है । इसलिए 'र्ह' को लुंठित/प्रकंपित व्यंजन कहा जाता है । र् का ही महाप्राण रूप विकसित हुआ है । (वह इस कमरे मे रहता है ।)

6. <u>अर्द्धस्वर/अंतःस्थ/ईषत् स्पर्श्य (Non-Fricative) व्यंजन–</u> य् व् के उच्चारण में मुंह में क्रमशः जीभ–तालु तथा ओठों का स्पर्श कम होता है इसलिए इन्हें ईषत् (तनिक) स्पर्श्य व्यंजन कहते है । य् तथा व् का उच्चारण अवरोध की दृष्टि से स्वर एवं व्यंजन के बीच का है, अतः इन्हें अर्द्धस्वर (आधे स्वर आधे व्यंजन) या अंतःस्थ (अवरोध की दृष्टि से स्वर एवं व्यंजन के बीच मे स्थित, न पूरे व्यंजन न पूरे व्यंजन (Semi-Vowel) व्यंजन भी कहा जाता है ।

7. <u>पार्श्विक (Leteral) व्यंजन–</u> ल् के उच्चारण मे साँस जीभ के दोनो पार्श्व से निकलती है इसलिए यह पार्श्विक व्यंजन कहलाता ।

8. <u>अल्पप्राण (Non-aspirated) एवं महाप्राण (Aspirated) व्यंजन–</u> जिन व्यंजनों के उच्चारण में साँस की मात्रा कम लगानी पडती है उन्हें अल्पप्राण कहते है ।

9. <u>घोष एवं अघोष व्यंजन–</u> जिन व्यंजनों के उच्चारण मे हवा के गले से निकलने पर स्वरतंत्रियों में कंपन पैदा होता है उन व्यंजनो को घोष कहा जाता है और जिनके उच्चारण मे यह कंपन नही होता उन्हें अघोष कहा जाता है ।

10. <u>नासिक्य (Nasal) व्यंजन–</u> ङ्, ञ्, ण्, न्, म् व्यंजनों के उच्चारण मे हवा नाक से निकलती है इसलिए इन्हें नासिक्य अथवा अनुनासिक व्यंजन कहते है ।

(ख) <u>उच्चारण स्थान के आधार पर वर्गीकरण :–</u>

व्यंजन ध्वनियों का उच्चारण करते समय हमारी प्राण वायु किसी–न–किसी मुख अवयव से टकराती है । उस अवयव को व्यंजन का उच्चारण स्थान कहा जाता है ।

1. <u>कोमल तालव्य (कंठ्य व्यंजन)</u> – क्, ख्, ग्, घ्, ङ्, हिन्दी मे कोमल तालव्य व्यंजन है क्योकि इनका उच्चारण स्थान कोमलतालु (कंठ से ऊपर का स्थान) है ।

2. <u>काकल्य/अलिजिह्वीय</u> – ह और विसर्ग (:) कंठ के थोडा नीचे काकल/ अलिजिह्वा के स्थान (छोटी जीभ) से बोले जाते है, इसलिए इन्हें काकल्य या अलिजिह्वीय कहा जाता है ।

3. <u>ओष्ठ्य व्यंजन</u>– प्, फ्, ब्, भ्, म्, म्ह, व् व्यंजन दोनो ओठों को मिलाने पर बोले जाते है, इसलिए इन्हें ओष्ठ्य कहा जाता है ।

4. <u>दंत्य व्यंजन</u>– त्, थ्, द्, ध्, दंत्य व्यंजन हैं जो जीभ की ऊपर की नोक द्वारा ऊपर के दांतो का स्पर्श करने से उच्चारित होते हैं ।

5. <u>दंतोष्ठ्य</u> – फ, व व्यंजन ऊपर के दांत एवं नीचे के ओठ के मिलने से उच्चरित होते हैं । फ व्यंजन अरबी, फारसी और अंग्रेजी के शब्दो मे तथा व व्यंजन अंग्रेजी के शब्दो मे प्रयुक्त होता हैं ।

6. <u>वर्त्स्य व्यंजन–</u> न्, न्ह्, र्, र्ह, ल्, ल्ह, स् व्यंजन वर्त्स्य हैं । ऊपर के दांतो से थोडा ऊपर मसूडों (वर्त्स) के साथ जीभ के स्पर्श से ये व्यंजन बोले जाते हैं ।

7. <u>तालु–वर्त्स्य (तालव्य) व्यंजन–</u> हिन्दी मे र् व्यंजन कही पर वर्त्स्य हैं, जैसे रमण, रत्न, किंतु रोटी, रौद्र मे मूर्धन्य हैं । यह आगे के वर्ण के उच्चारण स्थान के अनुसार उच्चरित होता हैं ।

8. <u>तालव्य व्यंजन–</u> य्, श् तालव्य व्यंजन हैं क्योकि ये जीभ के कठोर तालु भाग (वर्त्स/मसूडा एवं मूर्धा के बीच कास भाग) के स्पर्श करने से उच्चरित होते हैं ।

9. <u>मूर्धन्य व्यंजन –</u> ट्, ठ्, ड्, ढ्, ण्, ड्, ढ्, र्, र्ह, ष् मूर्धन्य व्यंजन हैं तथा इनका उच्चारण जीभ के अग्र भाग द्वारा मूर्धा (तालू का बीचवाला ऊपर कठोर भाग) को स्पर्श करने से होता हैं ।

संज्ञा

परिभाषा :-

संज्ञा का शाब्दिक अर्थ है- 'सम् + ज्ञा' अर्थात् सम्यक् ज्ञान करानेवाला अतः किसी भी वस्तु, व्यक्ति, स्थान, वर्ग, भाव स्थिति आदि का परिचय करानेवाले शब्द को संज्ञा कहते है । संज्ञा का पर्याय है- नाम । किसी व्यक्ति (प्राणी), वस्तु स्थान, स्थिति, वर्ग, भाव, विचार के नाम को संज्ञा कहते है ।

संज्ञा के भेद:-

व्यक्ति, गुण, वस्तु, भाव, स्थान आदि के आधार पर संज्ञा के तीन भेद माने गऐ है -

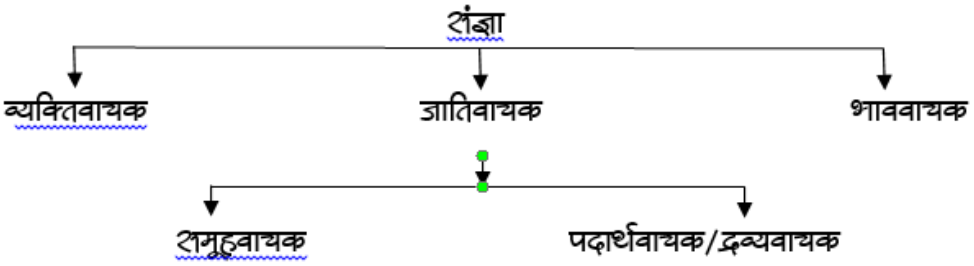

1. व्यक्तिवाचक संज्ञा:-

जो शब्द किसी व्यक्ति विशेष, स्थान विशेष या वस्तु विशेष का बोध कराते है ,उन्हे व्यक्तिवाचक संज्ञा कहते है । जैसे - गौतम बुद्ध, हिमालय, ताजमहल, सीता, गंगा, जयपुर, रामायण आदि । व्यक्तिवाचक संज्ञा की विशेषता यह है कि (1) यह दुनिया मे एक ही होती है और (2) इसकों हम पहले से जानने के आधार पर ही पहचान सकते है । गंगा/ताजमहल/रामायण को यदि हमने पहले से देखा है, समझा है तभी हम पहचान सकते है कि यह नदी तो गंगा है, यह भवन ताजमहल है, यह पुस्तक रामायण है, अचानक पहली बार देखने से नही ।

2. जातिवाचक संज्ञा :-

जो शब्द किसी प्राणी, पदार्थ या समुदाय की पूरी जाति/वर्ग (Class) का बोध कराता है, उसे जातिवाचक संज्ञा कहते है, जैसे- लडका, पर्वत, पुस्तक, घर, नगर, झरना, कुत्ता आदि ।

जातिवाचक संज्ञा तो एक वर्ग है और दुनिया मे उसकी इकाईयाँ अनेक होती है । लडका जातिवाचक संज्ञा है और दुनिया मे लडका वर्ग के अनेक विद्यमान है । जातिवाचक संज्ञा का आधार है- वस्तु आदि का समान गुण, और पहले से उन वर्ग गुणों का ज्ञान होने पर वैसे ही गुण अन्य किसी मे पहचान कर नई वस्तु/प्राणी को भी हम तुरन्त पहचान लेते है ।

प्रश्नः- नीचे लिखे शब्दों को व्यक्तिवाचक और जातिवाचक संज्ञा के रूप मे छांटिऐ-
ब्रह्मपुत्र, पत्थर, संगमरमर, ग्रेनाइट, फूल, कमल, हिमालय, अनाज, गेहूँ, कल्याणसोना (गेहूँ), गाय, जर्सी गाय, फल आम, लँगडा आम ।

उत्तरः- ऊपर के शब्दों मे केवल ब्रह्मपुत्र और हिमालय व्यक्तिवाचक संज्ञाऐं है शेष सभी जातिवाचक है । दुनिया मे व्यक्तिवाचक संज्ञा केवल एक होती है और जातिवाचक-अनेक ।

1. द्रव्यवाचक :-

किसी पदार्थ या द्रव्य (द्रव यानी बहने वाली वस्तु-पानी, तेल, आदि, द्रव्य यानी पदार्थ जैसे- मिट्टी, चीनी, तेल आदि) का बोध कराने वाला शब्दों को द्रव्यवाचक संज्ञा कहते है, जैसे- लोहा, सोना, घी, मिट्टी, तेल, दूध, लकडी, ऊन आदि ।

इन संज्ञाओं हम गिन नही सकते । दो लोहा, चार सोना आदि नही कर सकते, ये अगणनीय संज्ञाऐं है और ये मात्रात्मक या परिमाणात्मक है । इनमें से कुछ बहुवचन बनते है जैसे- मिट्टी,- मिट्टियाँ, लकडी-लकडियाँ आदि ।

2. समूहवाचक :-

ये संज्ञाऐं अनेक गणनीय संज्ञाओं के समूह से बनती है, और वे एकवचन एवं बहुवचन दोनो रूपों मे (सेना/सेनाऐं,/कक्षा/कक्षाऐं) प्रयुक्त हो सकती है । ये शब्द किसी व्यक्ति के वाचक न होकर समूह या समुदाय के वाचक होते है, जैसे- सेना, कक्षा, मंडली, जुलूस, परिवार, पुस्तकालय आदि ।

3. भाववाचक संज्ञा :-

जिन शब्दों से व्यक्तियों/पदार्थो के धर्म (Nature), गुण, दोष अवस्था (State), व्यापार (Activity), भाव स्वभाव या अवधारणा (Concept), विचार आदि का बोध होता है, वे भाववाचक संज्ञाऐं कहलाती है, जैसे कोमलता, बचपन, लम्बाई, बुढापा, शत्रुता, सलाह, मातृत्व, औचित्य, दासता, मित्रता आदि ।

भाववाचक संज्ञाएँ पाँच प्रकार के शब्दों से बनती है :-

1. जातिवाचक संज्ञा से (विभिन्न तद्धित प्रत्यय लगकर)-
लडका-लडकपन, मित्र-मित्रता, पशु-पशुता, आदमी-आदमीयत, चिकित्सक-चिकित्सा, चोर-चोरी, तरूण-तरूणाई, पुरूष-पुरूषत्व, मर्द-मर्दानगी आदि ।

2. सर्वनाम से (विभिन्न तद्धित प्रत्यय लगकर)-
निज-निजत्व, अपना-अपनापन, सर्व-सर्वस्व, अहम्-अंहकार, मम्-ममता, ममत्व आदि ।

3. विशेषण से (विभिन्न तद्धित प्रत्यय लगकर)-
बूढा-बुढापा, चतुर-चतुरता/चतुराई, मीठा-मिठास, मधुर-मधुरता/माधुर्य, खट्टा-खटास/खट्टापन, अरूण-अरूणिमा, कंजूस-कंजूसी, उचित-औचित्य, लघु-लघुता, आलसी-आलस्य, विद्वान-विद्वता गरीब-गरीबी, भूखा-भूख, परिष्कार, धीर-धैर्य/धीरज आदि ।

4. <u>क्रिया से संज्ञा – (विभिन्न कृत प्रत्यक्ष लगाकर)–</u>
चढना–चढाई, चलना–चाल, दौडना–दौड, सजाना–सजावट, उतारना–उतार, कमाना–कमाई, गाना–गान, जीना–जीवन, झुकना–झुकाव, खेलना–खेल, थकना–थकान, पहुंचना–पहुंच, जीतना–जीत, मिलाना–मिलावट, हँसना–हँसी, पीना–पान आदि ।

5. <u>अव्यय से –</u> निकट–निकटता, दूर– दूरी, नीचे–नीचता, ऊपर–ऊपरी, धिक्–धिक्कार आदि ।
इस प्रकार ता, त्व, पन, ई, आई, आ, इयत, आहट, त, य आदि प्रत्यय लगाने से अन्य शब्द भाववाचक संज्ञाओं मे परिवर्तित हो जाते है । हिन्दी मे संज्ञाऐं लिंग, वचन तथा कारक द्वारा अपना रूप निर्धारण करती है । ये संज्ञा के विकारक तत्व कहलाते है ।

सर्वनाम

परिभाषा–

संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त होने वाले शब्दों को सर्वनाम कहते है –
जैसे– मैं, तुम, वह, कौन, कोई, क्या आदि ।

सर्वनाम का शाब्दिक अर्थ है– 'सबका नाम' अर्थात् जो शब्द सबके नामों के स्थान पर लडका/लडकी/कमरा आदि सभी संज्ञाओं के लिए प्रयुक्त होते है, वे सर्वनाम कहलाते है ।
यह पुनरूक्ति दोषको मिटाने के लिए प्रयोग किया जाता है ।

सर्वनाम के भेद

सर्वनाम के निम्नलिखित 6 भेद है –

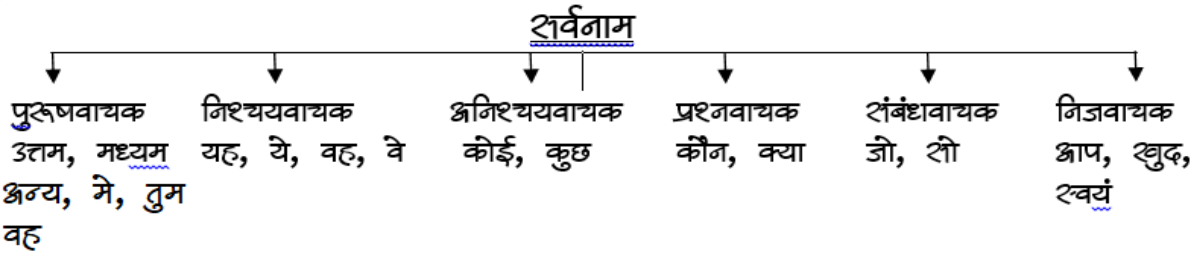

1. पुरूषवाचक सर्वनाम (Personal Pronoun)-

वक्ता, श्रोता या किसी अन्य के लिए जाने वाले कथन (पुरूष) हेतु जिन सर्वनामों का प्रयोग होता है, उन्हें पुरूषवाचक सर्वनाम कहते है । इसी आधार पर पुरूषवाचक सर्वनाम के तीन प्रकार माने गऐ है –

- उत्तम पुरूषवाचक सर्वनाम (First Person)– जिन सर्वनामों का प्रयोग बोलने वाला (वक्ता) या लिखनेवाला (लेखक) अपने लिए करता है, उन्हे उत्तम पुरूषवाचक सर्वनाम कहते है । मैं, मेरी, मेरा, मुझे, हम, हमारा, हमारी, हमको आदि उत्तम पुरूषवाचक सर्वनाम है, जैसे –
  - मैं अपने स्कूल गया ।
  - हम प्रदर्शनी देखने जाएँगे ।
  - इस विषय मे हमारा बोलना ठीक नही ।

- मध्यम पुरूषवाचक सर्वनाम (Second Person)– वक्ता या लेखक सुनने वाले (श्रोता) या पढनेवाले (पाठक) के लिए किए जाने वाले कथन हेतु जिन सर्वनामों का प्रयोग करता है, उन्हे मध्यम पुरूषवाचक सर्वनाम कहते है । तू, तुम, तेरा, तेरी, तुम्हारा, तुझे, तुम्हें, आप, आपका, आपकी, अपना, अपनी, आपकों, अपने आदि मध्यम पुरूषवाचक सर्वनाम है । वाक्यों मे इनका प्रयोग निम्नलिखित प्रकार के देखा जा सकता है ।
  1. तू बहुत अच्छा लिखती है ।
  2. तुम्हें गुरू जी ने बुलाया है ।
  3. आप सबके लिए पूज्यनीय है ।
  4. पहले अपने देखो ।

अन्य पुरूषवाचक सर्वनाम (Third Person)– जिन सर्वनामों का प्रयोग वक्ता या लेखक, वक्ता एवं श्रोता को छोडकर किसी अन्य के लिए किए जाने वाले कथन हेतु किया जाता है, उन्हें अन्य पुरूषवाचक सर्वनाम कहते हैं । यह, वह, ये, वे उसका, उसकी, इसे, उसे, इन्हें, उन्हे, उनका, उनकी, उनको, उसको आदि अन्य पुरूषवाचक सर्वनाम है जैसेः–

- वह रोते–रोते सो गई ।
- उसको बुलाकर समझाओं ।
- उन्हें अपनी गलती पर पछतावा है ।

2. निश्चयवाचक सर्वनाम (Demonstrative Pronoun)-

जिन सर्वनामों के द्वारा दूरवर्ती या समीपवर्ती व्यक्तियों, प्राणियों, वस्तुओं और निश्चित घटना व्यापार का बोध होता है, उन्हें निश्चयवाचक सर्वनाम कहते है जैसे–

- यह कौन है ? यह तो श्याम है । (यहाँ 'यह' की ओर संकेत है, 'यह' पर जोर है ।)
- ये रहे वे जिन्हें मै ढूँढ रहा था ।
- गीता का घर वह है ।
- वे जो बैठी है, अध्यापिकाऐं है ।

इन वाक्यों मे यह, वह, ये, वे, निश्चयवाचक सर्वनाम है तथा यह, ये समीपवर्ती तथा वह वे सर्वनाम दूरवर्ती संज्ञाओं के लिए प्रयुक्त हुऐ है ।

3. अनिश्चयवाचक सर्वनाम (Indefinate Pronoun)-

किसी अनिश्चत व्यक्ति, वस्तु, घटना, या व्यापार के लिए प्रयोग मे आने वाले सर्वनाम अनिश्चयवाचक सर्वनाम कहलातें है, जैसे– कोई किसी, कुछ । सजीव प्राणियों के लिए 'कोई', 'किसी' और निर्जीव पदार्थो के लिए 'कुछ' सर्वनाम का प्रयोग किया जाता है जैसे–

- शायद बाहर कोई आया है (व्यक्ति)
- किसी (व्यक्ति) से कुछ (वस्तु) मत लो ।
- हमें कुछ तो खाना पडेगा । (वस्तु)

4. प्रश्नवाचक सर्वनाम (Interrogative Pronoun)-

किसी वस्तु, घटना या व्यापार के विषय मे प्रश्न का बोध कराने वाले शब्द प्रश्नवाचक सर्वनाम कहलाते है । कौन, किसे, किसने, क्या आदि शब्द प्रश्नवाचक सर्वनाम है । इनमें भी कौन, किसे, किसने, किससे का प्रयोग व्यक्तियों के लिए और 'क्या, किसे, किससे' वस्तुओं के लिए प्रयुक्त होता है उदाहरणार्थ–

- कवियों को किसने आमंत्रित किया था ? (व्यक्ति)
- बाजार जाने के लिए किसे कहूँ ? (व्यक्ति)
- बाहर कौन आया है ? (व्यक्ति)
- आप चाय के साथ क्या लेंगे ? (वस्तु)
- तुम किससे लिखोगे ? (वस्तु)

5. <u>संबंधवाचक सर्वनाम (Relative Pronoun)-</u>

जिन सर्वनाम शब्दों का प्रयोग एक शब्द/वाक्यांश का दूसरे शब्द / वाक्यांश से संबंध प्रकट करने के लिए (जो–सो) किया जाता है या जो प्रधान उपवाक्य से आश्रित उपवाक्यों का संबंध जोडने का कार्य करते हैं, उन्हे संबंधवाचक सर्वनाम कहा जाता है । जो–सो, जिसे, वह, जो–वह, जैसा–वैसा, जिसकों–उसको, जिससे–उससे आदि शब्द संबंधवाचक सर्वनाम है, जैसे–

- जैसी करनी वैसी भरनी ।
- जिसे देखो, वही अत्यधिक व्यस्त है ।
- जितनी लंबी चादर, उतने ही पैर पसारिऐं ।

6. <u>निजवाचक सर्वनाम (Reflexive Pronoun)-</u>

ऐसे सर्वनाम शब्द जिनका प्रयोग कर्ता के लिए या कर्ता के साथ अपनत्व प्रकट करने के लिए किया जाता है, वे निजवाचक सर्वनाम कहलाते है । कुछ विद्वान निजवाचक सर्वनाम के वस्तुतः पुरूषवाचक सर्वनाम का ही एक भेद मानते है, और कुछ अलग । आप, अपने–आप, स्वयं, खुद स्वतः निज आदि निजवाचक सर्वनाम है यथा–

- मैं अपने–आप कार्यालय ढूँढ लूँगा ।
- उसने खुद/स्वयं/स्वतः ही परेशानी मोल ले ली है ।
- आप स्वयं चलकर निरीक्षण कर लीजिए ।

इस प्रकार उपर्युक्त वाक्यों मे प्रयुक्त अपने–आप, स्वयं, खुद निजवाचक सर्वनाम शब्दों का प्रयोग तीनो पुरूषों मे (उत्तम, अन्य, मध्यम) मे हो रहा है ।

विशेषण

परिभाषा:–

विशेषण वह शब्द-भेद है, जो संज्ञा अथवा सर्वनाम की विशेषता बताता है । जैसे–

1. काली गाय अधिक दूध देती है ।
- योग्य व्यक्ति सदैव आदर के पात्र होते है ।
- कुछ लोग यहाँ आ रहे है ।
- दो बच्चे खेल रहे है ।

उपर्युक्त वाक्यो में 'काली' 'अधिक', 'योग्य' विशेषण क्रमशः गाय, दूध, व्यक्ति संज्ञाओं की विशेषता बताते है । इसी प्रकार 'कुछ' एवं 'दो' भी 'लोग' व 'बच्चों' (संज्ञाओं) के विशेषण है ।

विशेषण और विशेष्य– जो शब्द संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता प्रकट करते है, वे 'विशेषण' और जिन संज्ञाओं या सर्वनामों की विशेषता प्रकट की जाती है, वे शब्द 'विशेष्य' कहलाते है ।

विशेषण के भेद :– संज्ञा की विशेषता के प्रकार के आधार पर विशेषण के चार भेद माने गए है–

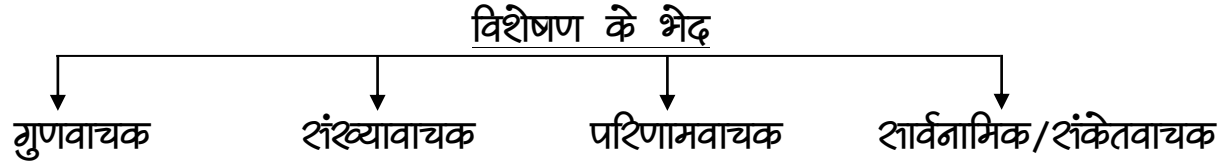

1. गुणवाचक विशेषण :– जो विशेषण संज्ञा या सर्वनाम (विशेष्य) के गुण-आकार, रंग, दशा, काल, स्थान आदि का बोध कराते है, उन्हे गुणवाचक विशेषण कहते है जैसे–

गुण/दोष:–	अच्छा, बुरा, सरल, कुटिल, ईमानदार, सच्चा, बेईमान, झूठा, दानवीर, शिष्ट दयालु, कृपालु, कंजूस, शांत, चतुर, गुस्सैल आदि ।
आकार:–	लंबा, छोटा, चौडा, चौकोर, तिकोना, गोल बडा, ठिगना, नाटा, ऊँचा, नीचा, अंडाकार, त्रिभुजाकार आदि ।
रंग:–	काला, पीला, लाल, सफेद, नीला, गुलाबी, हरा, सुनहरा, चमकीला, आसमानी आदि ।
स्वाद:–	खट्टा, मीठा, कडवा, नमकीन, कसैला, तीखा आदि ।
स्पर्श:–	कठोर, नरम, खुरदरा, कोमल, चिकना, गरम आदि ।
गंध:–	सुगंधित, दुर्गंधपूर्ण, बदबूदार, खुशबुमा, सौंधा, गंधहीन ।
दिशा:–	उत्तरी, पूर्वी, पश्चिमी, दक्षिणी, पाश्चात्य, भीतरी, बाहरी आदि ।
दशा:–	नया, पुराना, जीर्ण-शीर्ण, पिलपिला, ढीला, स्वस्थ, रोगी, सूखा, गाढा, पतला, पिछला, जमा आदि ।
काल:–	प्राचीन, नवीन, आधुनिक, भावी, ऐतिहासिक, साप्ताहिक, मासिक, सुबह का भूला, नया, पुराना, ताजा आदि ।
स्थान:–	ग्रामीण, भारतीय, रूसी, जापानी, बनारसी, देशी, विदेशी, बाहरी, तुर्की, वन्य, पहाडी, मैदानी, आदि ।
अवस्था:–	युवा, बूढा, तरूण, प्रौढ, अधेड, मुग्धा, धीर, गंभीर, अधीर, सहनशील आदि ।

वाक्यो मे कुछ उदाहरण है–

- अधिक गर्म दूध नही पीना चाहिए ।
- आम मीठा है ।
- संगमरमर चिकना पत्थर है ।
- आँखो की ज्योति के लिए हरा रंग अच्छा माना गया है ।

उपर्युक्त वाक्यों मे गर्म, मीठा, चिकना, हरा गुणवाचक विशेषण है जो क्रमशः दूध की अवस्था, आम के स्वाद, पत्थर का स्पर्शबोध और रंग के गुण को व्यक्त रहे है ।

2. संख्यावाचक विशेषण :– गणनीय संज्ञा या सर्वनाम की संख्या संबंधी विशेषता का बोध करानेवाले शब्द संख्यावाचक विशेषण कहलाते है । जैसे–

- कक्षा मे पचास लडके अध्ययन करते है ।
- माता जी ने एक दर्जन केले खरीदे है ।
- झगडे मे कई लोग मारे गए है ।

उपर्युक्त उदाहरणों मे पचास, एक दर्जन, कई संख्यावाचक विशेषण है जो कि क्रमशः लडके, केले, लोग संज्ञाओं की संख्यागत विशेषता का बोध कराते है । जातिवाचक या भाववाचक होता है ।

संख्यावाचक विशेषण के भेद :– संख्यावाचक विशेषण के विशेष्य की निश्चित और अनिश्चित संख्या के आधार पर दो भेद किए गए है ।

- निश्चित संख्यावाचक
- अनिश्चित संख्यावाचक

(क) निश्चित संख्यावाचक :– जहाँ विशेषण की निश्चित संख्या का बोध होता है ।

- कक्षा मे दस विद्यार्थी आए है ।
- दो दर्जन केले बीस रूपये के है ।
- आधा दरवाजा खुला हुआ है ।

इन वाक्यों मे आए हुये दस, दो दर्जन, आधा शब्द निश्चित संख्या का बोध कराते है ।
संख्यावाचक विशेषणों मे अपूर्णांक विशेषण– आधा, पौन, डेढ, एक चौथाई आदि तथा क्रमवाची विशेषण जैसे– पहला, दसवाँ आदि, गुणा/ आवृत्तिवाचक विशेषण, जैसे– दुगुना, चौगुना, समूहवाचक विशेषण, जैसे दोनो, चारो तथा प्रत्येकवाचक जैसे प्रति व्यक्ति, हर आदमी आदि होते है ।

(ख) अनिश्चित संख्यावाचक विशेषण :– जो विशेषण संज्ञा या सर्वनाम की निश्चित संख्या का बोध न कराकर उनकी संख्या का अस्पष्ट अनुमान प्रस्तुत करते है, वे अनिश्चित संख्यावाचक विशेषण कहलाते है, जैसे– कुछ, कई, थोडे, कम, बहुत, काफी, अगणित, दसियों, हजारो, अधिक, कोई–सौ, सौ–एक, करीब सौ, कोई दो सौ इत्यादि । वाक्यों मे कतिपय उदाहरण निम्नलिखित है–

- कुछ लडके मैदान मे खेल रहे है ।
- मेरे पास बहुत से रूपये है ।
- बस थोडे पन्ने लिखने बाकी है ।
- ट्रेन-दुर्घटना मे सैकडों व्यक्ति मारे गए ।
- सडक पर कोई-सौ लडके खडे थे ।

इन वाक्यों मे कुछ, बहुत-से, थोडे, सैकडों, कोई-सौ अनिश्चित संख्याओं का बोध कराते है ।

3. परिमाणवाचक :- मात्रात्मक, द्रव्यवाचक संज्ञा या सर्वनाम की माप-तौल संबंधी विशेषता को प्रकट करने वाले शब्दों को परिमाणवाचक विशेषण कहते है, जैसे-
   - पहलवान प्रतिदिन पाँच लीटर दूध पी जाता है ।
   - भिखारी को थोडा आटा दे दो ।

यहां 'पाँच लीटर दूध' 'थोडा आटा' व आटे का माप है जो गण्य नही है, केवल मापा जा सकता है, अतः वे परिमाणवाचक विशेषण है ।

परिमाणवाचक विशेषण माप-तौल की निश्चितता व अनिश्यितता के आधार पर दो प्रकार के माने गए है-
(क) निश्चित परिमाणवाचक- जो संज्ञा या सर्वनाम के निश्चित परिमाण का बोध कराते है, उन्हे निश्चित परिमाणवाचक विशेषण कहते है, यथा-

- चार लीटर दूध लेकर आओ ।
- बाजार से दस किलो चीनी ले आना ।
- यह चैन पंद्रह ग्राम सोने की है ।
- उसके पास बीस एकड जमीन है ।
- हमे दस ट्रक भूसा चाहिए ।

उपर्युक्त वाक्यों मे चार लीटर, दस किलो, पंद्रह ग्राम, बीस एकड, दस ट्रक क्रमशः दुध, चीनी, सोना, जमीन और भूसे के निश्चित माप है, इसलिए ये निश्चित परिमाणवाचक विशेषण है ।

(ख) अनिश्चित परिमाणवाचक- जिन विशेषणों के द्वारा संज्ञा या सर्वनाम के निश्चित परिणाम का बोध न होकर अनिश्चित परिमाण का बोध होता है, उन्हे अनिश्चित परिमाणवाचक विशेषण कहते है जैसे-

- वह ढेर सारा मक्खन खा गया । (अनिश्चित मक्खन)
- मुझे भी कुछ नाश्ता दे दो ।
- थोडा पानी देना ।
- जरा-सा आचार दे दो ।
- यहाँ ढेरों आम पडे है ।

उपर्युक्त उदाहरणों मे 'ढेर सारा', कुछ, थोडा, जरा-सा, ढेरों अनिश्चित परिमाणवाचक विशेषण है, जो क्रमशः मक्खन, नाश्ता, पानी, अाचार, आम की अनिश्चित माप का बोध कराते है ।अधिक मात्रा का बोध कराने के लिए परिमाणवाचक विशेषण के साथ 'ओ' जोड दिया जाता है ।

4. सार्वनामिक विशेषण :- जो सर्वनाम संज्ञा के स्थान पर आने के बजाय संज्ञा के पहले लगकर उसकी विशेषता बताते है, उन्हें सार्वनामिक विशेषण कहते है ।

सार्वनामिक विशेषण के चार भेद :-

(क) निश्चयवाचक/संकेतवाचक सार्वनामिक विशेषण :- जिनसे संज्ञा या सर्वनाम निश्चययात्मकता का संकेत होता है, यथा

- उस व्यक्ति को बुलाइए । (व्यक्ति विशेष की ओर संकेत है)
- क्या यह पुस्तक तुम्हारी है ? (पुस्तक की ओर संकेत है)

(ख) अनिश्चयवाचक सार्वनामिक विशेषण :- इनसे संज्ञा या सर्वनाम की अनिश्चयात्मकता का बोध होता है, जैसेः-

- वहाँ कुछ भी वस्तु खाने के लिए नही मिलेगी ।
- छत पर कोई व्यक्ति खडा है ।

(ग) प्रश्नवाचक सार्वनामिक विशेषण :- इन विशेषणों से संज्ञा या सर्वनाम से संबंधित प्रश्नों का बोध होता है जैसे :-

- वहाँ मैदान मे कौन छात्र दौड रहा है ?
- तुम्हारे लिए बाजार से क्या चीज लाऊँ ?
- तुम्हे किस लडके ने मारा है ?

उपर्युक्त उदाहरणों मे प्रयुक्त 'कौन' 'क्या' 'किस' आदि संज्ञा के पहले लगे है तथा विशेष्य से संबंधित प्रश्नों का बोध करा रहे है ।

(घ) संबंधवाचक सार्वनामिक विशेषण :- जिन विशेषणों से एक संज्ञा या सर्वनाम का संबंध वाक्य मे प्रयुक्त अन्य संज्ञा या सर्वनाम शब्द के साथ जोडा जाता है जैसेः-

- जो घडी मैंने कल खरीदी थी, वह खो गई है ।
- जिस कार्य को करने से नुकसान होता है, उस पर विचार करना मूर्खता है ।
- वह व्यक्ति सामने जा रहा है, जिससे तुम्हारा झगडा हुआ था ।

इन उदाहरणों के द्वारा स्पष्ट है कि जो-वह, जिस-उस, वह-जिससे सार्वनामिक विशेषणों का संबंध वाक्यों मे प्रयुक्त अन्य विशेष्यों- क्रमशः घडी, कार्य और व्यक्ति से स्थापित किया गया है ।

क्रिया

वाक्य मे जिस शब्द-समूह से किसी कार्य के
1. करने अथवा 2. होने का बोध होता है, उसे क्रिया कहते है, जैसेः-

- मोहन खाना खा रहा है ।
- हवा बह रही है । (करना-हवा बहने की क्रिया कर रही है ।)
- पुस्तक अलमारी मे है । (होना)

उपर्युक्त वाक्यों मे 'खा रहा है' 'बह रही है', 'है' क्रियापद है ।

वाक्य मे कर्म की संभावना के आधार पर भेद :-

अकर्मक और सकर्मक क्रियाः- किसी क्रिया के करने हेतु कर्म की आवश्यकता/संभावना होने या न होने के आधार पर क्रिया के मुख्यतः दो भेद है - सकर्मक और अकर्मक ।

(क) अकर्मक क्रिया :- जिस वाक्य मे क्रिया का फल कर्म पर न पडकर केवल कर्ता पर ही पडता है अर्थात जिस क्रिया के करने मे कर्म की आवश्यकता ही नही होती है, बिना किसी कर्म के क्रिया सम्पन्न हो सकती है, उसे अकर्मक क्रिया कहते है, जैसेः-

- नरेश दौड रहा है ।
- चिडिया उड रही है ।
- बच्चा रोता है ।

उपर्युक्त वाक्यों मे 'दौड रहा है', 'उड रही है', 'रोता है' क्रियाओं के फल का प्रभाव क्रमशः नरेश, चिडिया और बच्चा कर्ता-पदों पर ही पडता है और ये क्रियाऐं बिना किसी कर्म के क्रिया केवल कर्ता के द्वारा ही सम्पन्न हो सकती है ।

(ख) सकर्मक क्रिया :- जहाँ क्रिया के घटित होने की प्रक्रिया मे कर्म की आवश्यकता होती ही है, उसे सकर्मक क्रिया कहते है । सकर्मक क्रिया कर्म के बिना सम्पन्न हो ही नही सकती, जैसे :-

1. राम पत्र लिखता है । 2. लडके ने बेर खाए ।
3. मोहित पानी पीता है । 4. अध्यापक प्रश्न पूछते है ।

उपर्युक्त वाक्यों मे 'लिखना', 'खाना', 'पीना', 'पूछना' क्रियाओं का प्रभाव क्रमशः पत्र, बेर, पानी व प्रश्न पूछा जाता है और उसका कोई-न-कोई उत्तर अवश्य आता है और वह उत्तर ही कर्म होता है, और वह क्रिया सकर्मक होती है, राम क्या लिखता है ? (पत्र), लडके ने क्या खाए ? (बेर), मोहित ने क्या पिया ? (पानी) ।

क्रिया की पूर्णता के आधार पर भेद :-

अपूर्ण क्रिया - कुछ क्रियाओं का अपने-आपमें अर्थ पूर्ण ही नही होता, इसलिए अर्थ पूर्ण करने के लिए किसी अन्य 'पूरक' शब्द पर निर्भर होना होता है जो क्रिया न होकर संज्ञा या विशेषण पद होता है, ऐसी क्रियाओं को अपूर्ण क्रिया कहते है, अर्थात क्रिया अपना अर्थ स्वयं न देकर संज्ञा, विशेषण पद से ही दे पाती है, जैसे-

- अजीत श्याम को मूर्ख समझता है । ('मूर्ख'– विशेषण के बिना क्रिया 'समझता है' का अर्थ स्पष्ट नही होगा ।)
- अशोक जी हमारे गुरू थे । (गुरू–संज्ञापद के बिना 'थे' का अर्थ स्पष्ट नही होता ।)

स्पष्ट है कि इन वाक्यों मे प्रयुक्त पूरक (मूर्ख, गुरू–दोनो संज्ञापद) का लोप कर देने से वाक्य मे पूर्णता नही आती । ऐसे पूरक कर्मपूरक कहे जाते है, जो विशेषण और संज्ञा दोनो ही हो सकते है ।

<u>पूर्ण क्रिया –</u> जिस क्रिया–पद से क्रिया का अर्थ स्पष्ट हो जाए, पूरक के रूप मे गैर–क्रियापद (संज्ञा–विशेषण) की आवश्यकता नही हो, उसे पूर्ण क्रिया कहते है, जैसे :–

1. लडका सोता है । 2. लडका पढता है ।

यहाँ 'सोता है', 'पढता है' क्रियापद से पूर्ण अर्थ निकल जाता है । ये दोनो पद क्रियापद ही है । अतः ये पूर्ण क्रियाएँ है ।

<u>क्रिया की संरचना के आधार पर भेद :–</u>

<u>प्रेरणार्थक क्रिया –</u> जहाँ कर्ता खुद क्रिया को न करके दूसरे को क्रिया करने की प्रेरणा देता है वहाँ प्रेरणार्थक क्रिया होती है । यहाँ कर्ता भी क्रिया तो करता है किन्तु वह प्रेरणा देने की क्रिया करता है । प्रेरणार्थक क्रियाओं मे 'वा' लगता है ।

- नरेश ने नाई से बाल कटवाए ।
- सुनीता ने अर्चना से पत्र लिखवाया ।
- मोहन ने माली से दूब कटवाई ।

सभी प्रेरणार्थक क्रियाएँ सकर्मक होती है ।

मुख्य क्रिया तथा सहायक क्रिया– मुख्य क्रिया के अर्थ को पूरा करने मे सहायता करने वाला क्रियापद सहायक क्रिया कहलाता है, जैसे –

- मै गया हुआ था । (यहाँ गया मुख्य क्रिया है तथा हुआ था सहायक क्रिया है ।)
- सुरेश सुन रहा था । (सुन– मुख्य क्रिया है तथा रहा था– सहायक क्रियाएँ)

<u>नामधातु क्रिया:–</u> जब संज्ञा एवं विशेषण अर्थात् नामपद शब्दों के अतं मे प्रत्यय जोडने पर किसी क्रिया का निर्माण होता है, तब वह नामधातु क्रिया होती है जैसे :–

- सेठ ने मकान हथियाया । (हाथ–संज्ञापद)
- मुझ पर दृश्य फिल्माया । (फिल्म–संज्ञापद)
- लडकी बतियाई । (बात संज्ञापद)

<u>पूर्वकालिक क्रिया:–</u> जब कर्ता एक कार्य समाप्त कर उसी पल दूसरा कार्य आरम्भ करता है, तब पहली क्रिया पूर्वकालिक क्रिया कहलाती है । पूर्वकालिक क्रिया के अतं मे कर लगता है– <u>सोकर, उठकर, जाकर</u> आदि ।

- बच्चे दूध पीकर सो गए । (सोने से पहले दूध पीया ।)
- रमेश खाना खाकर विद्यालय गया ।
- रमेश खाना खाने के बाद विद्यालय गया ।